मनसा सेवा - 42

अव्यक्त बापदादा :- (09/04/1986)

➳ _ ➳ **सच्चे सेवाधारी की निशानी है त्याग अर्थात नम्रता, और तपस्या अर्थात एक बाप के निश्चय, नशे में दृढ़ता। यथार्थ सेवा इसको कहा जाता है। बापदादा निरंतर सच्चे सेवा धारी बनने के लिए कहते हैं। नाम सेवा हो और स्वयं भी डिस्टर्ब हो, दूसरे को भी डिस्टर्ब करें इस सेवा से मुक्त होने के लिए बापदादा कह रहे हैं। ऐसे सेवा न करना अच्छा है। क्योंकि सेवा का विशेष गुण संतुष्टता है। जहां संतुष्टता नहीं, चाहे स्वयं से संपर्क वालों से, वह सेवा न स्वयं को फल की प्राप्ति कर आएगी, ना दूसरों को। इससे स्वयं अपने को पहले संतुष्ट मणि बनाएं फिर सेवा में आवे वह अच्छा है। नहीं तो सूक्ष्म बोझ जरूर है। वह अनेक प्रकार का बोझ उड़ती कला में विघ्न रूप बन जाता है।**

➳ _ ➳ **बोझ चढाना नहीं है उतारना है। जब ऐसे समझते हो तो इससे एकांतवास बनना अच्छा है क्योंकि एकांतवासी बनने से स्व परिवर्तन का अटेंशन जाएगा। तो बापदादा तपस्या जो कह रहे हैं वह सिर्फ दिन रात बैठे-बैठे तपस्या के लिए नहीं कह रहे हैं। तपस्या में बैठना भी सेवा ही है। लाइट हाउस, माइट हाउस बन शांति की शक्ति की किरणों द्वारा वायुमंडल बनाना है। तपस्या के साथ मनसा सेवा जुड़ी हुई है। अलग नहीं है। न्हीं तो तपस्या क्या करेंगे।**

➳ _ ➳ **श्रेष्ठ आत्मा - ब्राह्मण आत्मा तो हो गए। अब तपस्या अर्थात स्वयं सिर्फ शक्तियों से सम्पन्न बन दृढ़ स्थिति, दृढ़ संकल्प द्वारा विश्व की सेवा करना। सिर्फ वाणी की सेवा सेवा नहीं है। जैसे सुख शांति पवित्रता का आपस में संबंध है वैसे त्याग तपस्या सेवा का संबंध है। बापदादा तपस्वी रूप अर्थात शक्तिशाली सेवा धारी रूप बनाने के लिए कहते हैं। तपस्वी रूप की दृष्टि भी सेवा करती। उनका शांत स्वरूप चेहरा भी सेवा करता, तपस्वी मूर्त के दर्शन मात्र से भी प्राप्ति की अनुभूति होती है।**

➳ _ ➳ **इसलिए आजकल देखो जो हठ से तपस्या करते हैं, उनके दर्शन के पीछे भी कितनी भीड़ हो जाती है। यह आपकी तपस्या के प्रभाव का यादगार अंत तक चला आ रहा है। तो समझा - सेवा भाव किस को कहा जाता है। सेवा भाव अर्थात सर्व की कमजोरियों का सामना करने का भाव नहीं, समाने का भाव। स्वयं सहन कर दूसरे को शक्ति देने का भाव। इसलिए सहनशक्ति कहा जाता है।**

➳ _ ➳ **सहन करना - शक्ति भरना और शक्ति देना है। सहन करना, मरना नहीं है। कई सोचते हैं हम तो सहन कर कर मर जाएंगे। क्या हमें मरना है क्या! लेकिन यह मरना नहीं है। यह सब के दिलों में स्नेह से जीना है। कैसा भी विरोधी हो, रावण से भी तेज हो, एक बार नहीं, 10 बार सहन करना पड़े फिर भी सहन शक्ति का फल अविनाशी और मधुर होगा। वह भी जरूर बदल जाएगा। सिर्फ यह भावना नहीं रखो कि मैंने इतना सहन किया, तो यह भी कुछ करें। अल्पकाल के फल की भावना नहीं रखो। रहम भाव रखो। इस को कहा जाता है सेवा भाव।**

➢➢ **सच्चे सेवाधारी की निशानी है... त्याग और तपस्या...**

➳_ ➳ **त्याग अर्थात**

→ जीवन में नम्रता हो...

→ अहम का त्याग

→ पुराने संस्कारों का त्याग

→ मान सम्मान का त्याग

→ अनावश्यक इच्छाओं का त्याग

➳_ ➳ तपस्या अर्थात

→ एक बाप के निश्चय और नशे में दृढ़ता

➳_ ➳ बाबा निरंतर सेवाधारी अर्थात त्याग मूर्त और तपस्वी मूर्त बन्ने के लिए कहते हैं...

➢➢ बोझ बाप को देना है...

➳_ ➳ बोझ चढाना नहीं, उतारना है...

→ *एकांतवासी अर्थात एक की याद में समाना...*

➢➢ सेवाभाव अर्थात

➳_ ➳ सर्व की कमजोरियों को समाने का भाव...

➳_ ➳ किसी की कमजोरियों का वर्णन नहीं करना...

➳_ ➳ किसी की कमजोरी का सामना न करना...

➳_ ➳ स्वयम सहन कर दूसरों को शक्ति देने का भाव..

→ सबके दिलों में स्नेह भरना है तो सहन करना ही होगा...

➳_ ➳ शक्ति भरना स्वय में भी, दूसरों में भी..

→ जिस सेवा से हम डिस्टर्ब हो और दुसरे भी.. ऐसी सेवा का कोई लाभ नहीं है...

■ सेवा में संतुष्टता नहीं तो न स्वयम को फल मिलता है, न दुसरो को...

➢➢ तपस्या के साथ मनसा सेवा भी जुडी हुई है..

➳_ ➳ जीवन में पवित्रता, सुख, शांति है तो स्वत सेवा होगी...

→ तपस्वी मूर्त के दर्शन मात्र से भी प्राप्ति की अनुभूति होती है..

→ उनकी दृष्टि से भी सेवा होती है...

→ उनके शांत स्वरूप चेहरे से भी सेवा होती है...

➢➢ धारणा के लिए मुख्य बातें...

➳_ ➳ सहनशक्ति

➳_ ➳ त्याग

➳_ ➳ तपस्या

➳_ ➳ **कमजोरियों को समाना**

→ **तपस्या के लिए अपनी स्थिति लाइट हाउस और माईट हाउस की चाहिए...**